

मिनी-मैक्स सीरीज

पंचतंत्र

की लोकप्रिय कहानियाँ



प्रभात

पंचतंत्र की लोकप्रिय कहानियाँ

महेश दत्त शर्मा



प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

चाल

एक नदी के किनारे एक विशाल पेड़ था। उस पेड़ पर बगुलों का बहुत बड़ा झुंड रहता था। उसी पेड़ के कोटर में काला नाग रहता था। जब बगुले के अंडों से बच्चे निकल आते तो मौका मिलते ही वह नाग उन्हें खा जाता था। इस प्रकार वर्षों से काला नाग बगुलों के बच्चे हड़पता आ रहा था। बगुले भी वहाँ से जाने का नाम नहीं लेते थे, क्योंकि वहाँ नदी में कछुओं की भरमार थी। कछुओं का नरम मांस बगुलों को बहुत अच्छा लगता था।

इस बार नाग जब एक बच्चे को हड़पने लगा तो पिता बगुले की नजर उस पर पड़ गई। बगुले को पता लग गया कि उसके पहले बच्चों को भी वह नाग खाता रहा होगा। उसे बहुत दुःख हुआ। उसे आँसू बहाते एक कछुए ने देखा और पूछा, “मामा, क्यों रो रहे हो?”

गम में जीव हर किसी के आगे अपना दुःखड़ा रोने लगता है। उसने नाग और अपने मृत बच्चों के बारे में बताकर कहा, “मैं उससे बदला लेना चाहता हूँ।”

कछुए ने सोचा, ‘अपने बच्चों के गम में मामा रो रहा है, पर जब यह हमारे बच्चे खा जाता है तब तो कुछ खयाल नहीं आता कि हमें कितना गम होता होगा। तुम साँप से बदला लेना चाहते हो तो हम भी तो तुमसे बदला लेना चाहेंगे।’



बगुला अपने शत्रु को अपना दुःख बताकर गलती कर बैठा था। चतुर कछुआ एक तीर से दो शिकार करने की योजना सोच चुका था। वह बोला, “मामा! बदला लेने का मैं तुम्हें बहुत अच्छा उपाय सुझाता हूँ।”

बगुले ने अधीर स्वर में पूछा, “जल्दी बताओ, वह उपाय क्या है। मैं तुम्हारा एहसान जीवन भर नहीं भूलूँगा।”

कछुआ मन-ही-मन मुसकराया और उपाय बताने लगा, “यहाँ से कुछ दूर एक नेवले का बिल है। नेवला साँप का घोर शत्रु है। नेवले को मछलियाँ बहुत प्रिय होती हैं। तुम छोटी-छोटी मछलियाँ पकड़कर नेवले के बिल से साँप के कोटर तक बिछा दो, नेवला मछलियाँ खाता-खाता साँप तक पहुँच जाएगा और उसे समाप्त कर देगा।”

बगुला बोला, “तुम जरा मुझे उस नेवले का बिल दिखा दो।”

कछुए ने बगुले को नेवले का बिल दिखा दिया। बगुले ने वैसे ही किया जैसे कछुए ने समझाया था। नेवला सचमुच मछलियाँ खाता हुआ कोटर तक पहुँचा। नेवले को देखते ही नाग ने फुँकार छोड़ी। कुछ ही देर की लड़ाई में नेवले ने साँप के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। बगुला खुशी से उछल पड़ा।

कछुए ने मन-ही-मन में कहा, ‘यह तो शुरुआत है मूर्ख बगुले। अब मेरा बदला शुरू होगा और तुम सब बगुलों का नाश होगा।’

कछुए का सोचना सही निकला। नेवला नाग को मारने के बाद वहाँ से नहीं गया। उसे अपने चारों ओर बगुले

नजर आए, उसके लिए महीनों के लिए स्वादिष्ट खाना। नेवला उसी कोटर में बस गया, जिसमें नाग रहता था और रोज एक बगुले को अपना शिकार बनाने लगा। इस प्रकार एक-एक करके सारे बगुले मारे गए।

सीख : शत्रु की सलाह में निश्चित ही उसका स्वार्थ छिपा होता है।



कटी पूँछ

किसी शहर में मंदिर का निर्माण किया जा रहा था। मंदिर में लकड़ी का काम बहुत था, इसलिए लकड़ी चीरने वाले बहुत से मजदूर काम पर लगे हुए थे। यहाँ-वहाँ लकड़ी के लट्ठे पड़े हुए थे और लट्ठे व शहतीर चीरने का काम चल रहा था। सारे मजदूरों को दोपहर का भोजन करने के लिए शहर जाना पड़ता था, इसलिए दोपहर के समय एक घंटे तक वहाँ कोई नहीं होता था। एक दिन खाने का समय हुआ तो सारे मजदूर काम छोड़कर चल दिए। एक लट्ठा आधा चिरा रह गया था। आधे चिरे लट्ठे में मजदूर लकड़ी का कीला फँसाकर चले गए। ऐसा करने से दोबारा आरी घुसाने में आसानी रहती है।

तभी वहाँ बंदरों का एक दल उछलता-कूदता आया। उनमें एक बड़ा शरारती बंदर भी था, जो बिना मतलब चीजों से छेड़छाड़ करता रहता था। बंदरों के सरदार ने सबको वहाँ पड़ी चीजों से छेड़छाड़ न करने का आदेश दिया। सारे बंदर पेड़ों की ओर चल दिए, पर वह शैतान बंदर सबकी नजर बचाकर पीछे रह गया और लगा अड़ंगेबाजी करने।

उसकी नजर अधचिरे लट्ठे पर पड़ी। बस, वह उसी पर पिल पड़ा और बीच में अड़ाए गए कीले को देखने लगा। फिर उसने पास पड़ी आरी को देखा। उसे उठाकर लकड़ी पर रगड़ने लगा। उससे किर्र-किर्र की आवाज निकलने लगी तो उसने गुस्से से आरी पटक दी। उन बंदरों की भाषा में किर्र-किर्र का अर्थ 'निखट्टू' था। वह दोबारा लट्ठे के बीच फँसे कीले को देखने लगा।



उसके दिमाग में कौतूहल होने लगा कि इस कीले को लट्ठे के बीच में से निकाल दिया जाए तो क्या होगा? अब वह कीले को पकड़कर उसे बाहर निकालने के लिए जोर-आजमाइश करने लगा।

कीला जोर लगाने पर हिलने व खिसकने लगा तो बंदर अपनी शक्ति पर खुश हो गया।

वह और जोर से खों-खों करता कीला सरकाने लगा। इस धींगामुश्ती के बीच बंदर की पूँछ दो पाटों के बीच आ गई थी, जिसका उसे पता ही नहीं लगा।

उसने उत्साहित होकर एक जोरदार झटका मारा और जैसे ही कीला बाहर खिंचा, लट्ठे के दो चिरे भाग फटाक से क्लिप की तरह जुड़ गए और बीच में फँस गई बंदर की पूँछ। बंदर चिल्ला उठा।

तभी मजदूर वहाँ लौटे। उन्हें देखते ही बंदर ने भागने के लिए जोर लगाया तो उसकी पूँछ टूट गई। वह चीखता हुआ टूटी पूँछ लेकर भागा।

सीख : बिना सोचे-समझे कोई काम न करें।

काली करतूत

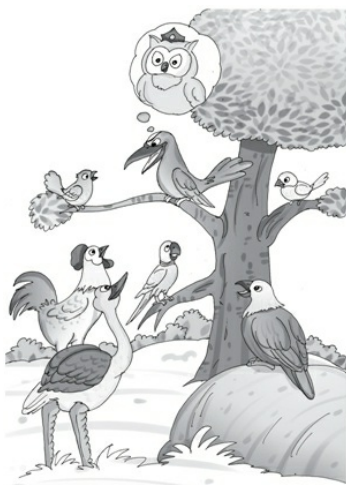
एक बार जंगल में पक्षियों की आम सभा हुई। पक्षियों के राजा गरुड़ थे, लेकिन सभी गरुड़ से असंतुष्ट थे। मोर की अध्यक्षता में सभा हुई। मोर ने भाषण दिया—“साथियो, गरुड़जी हमारे राजा हैं, पर मुझे यह कहते हुए बहुत दुःख होता है कि उनके राज में हम पक्षियों की दशा बहुत खराब हो गई है। उसका यह कारण है कि गरुड़जी तो यहाँ से दूर विष्णु लोक में विष्णुजी की सेवा में लगे रहते हैं। हमारी ओर ध्यान देने का उन्हें समय ही नहीं मिलता। हमें अपनी फरियाद लेकर राजा सिंह के पास जाना पड़ता है। हमारी गिनती न तीन में रह गई है और न तेरह में। अब हमें क्या करना चाहिए, यही विचारने के लिए यह सभा बुलाई गई है।”

हुदहुद ने प्रस्ताव रखा, “हमें नया राजा चुनना चाहिए, जो हमारी समस्याएँ हल करे और दूसरे राजाओं के बीच बैठकर हम पक्षियों को जीव जगत् में सम्मान दिलाए।”

मुरगे ने बाँग दी, “कुकडू कूँ। मैं हुदहुदजी के प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।”

चील ने जोर की सीटी मारी, “मैं भी सहमत हूँ।”

मोर ने पंख फैलाए और घोषणा की, “तो सर्वसम्मति से तय हुआ कि हम नए राजा का चुनाव करें, पर किसे बनाएँ हम राजा?”



सभी पक्षी एक-दूसरे से सलाह करने लगे। काफी देर बाद सारस ने अपना मुँह खोला—“मैं राजा पद के लिए उल्लूजी का नाम पेश करता हूँ। वे बुद्धिमान हैं। उनकी आँखें तेजस्वी हैं। स्वभाव अति गंभीर है, ठीक जैसे राजा को शोभा देता है।”

हार्नबिल ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा—“सारसजी का सुझाव बहुत दूरदर्शितापूर्ण है। यह तो सब जानते हैं कि उल्लूजी लक्ष्मी देवी की सवारी हैं। उल्लू हमारे राजा बन गए तो हमारी गरीबी दूर हो जाएगी।”

लक्ष्मीजी का नाम सुनते ही सब पर जादू सा प्रभाव हुआ। सभी पक्षी उल्लू को राजा बनाने पर राजी हो गए।

मोर बोला, “ठीक है, मैं उल्लूजी से प्रार्थना करता हूँ कि वह दो शब्द बोलें।”

उल्लू ने घुघुआते हुए कहा, “भाइयो, आपने राजा पद पर मुझे बिठाने का जो निर्णय किया है, उससे मैं गद्गद हो गया हूँ। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुझे आपकी सेवा करने का जो मौका मिला है, मैं उसका सदुपयोग करते हुए आपकी सारी समस्याएँ हल करने का भरसक प्रयत्न करूँगा, धन्यवाद।”

पक्षियों ने एक स्वर में ‘उल्लू महाराज की जय’ का नारा लगाया। कोयलें गाने लगीं। चील कहीं से मनमोहक

डिजाइन वाला रेशम का शाल उठाकर ले आई। उसे एक डाल पर लटकाया गया और उल्लू उस पर विराजमान हुए। कबूतर कपड़ों की रंग-बिरंगी लीरें उठाकर लाए और उन्हें पेड़ की टहनियों पर लटकाकर सजाने लगे। मोरों की टोलियाँ पेड़ के चारों ओर नाचने लगीं।

मुरगों व शतुरमुरगों ने पेड़ के निकट पंजों से मिट्टी खोद-खोदकर एक बड़ा हवन कुंड तैयार किया। दूसरे पक्षी लाल रंग के फूल ला-लाकर कुंड में ढेरी लगाने लगे। कुंड के चारों ओर आठ-दस तोते बैठकर मंत्र पढ़ने लगे।

बया चिड़ियों ने सोने-चाँदी के तारों से मुकुट बुन डाला तथा हंस मोती लाकर मुकुट में फिट करने लगे। दो मुख्य पुजारियों ने उल्लू से प्रार्थना की, “हे पक्षी श्रेष्ठ, चलिए लक्ष्मी मंदिर चलकर लक्ष्मीजी का पूजन करें।”

निर्वाचित राजा उल्लू पंडितों के साथ लक्ष्मी मंदिर की ओर उड़ चले। उनके जाने के कुछ क्षण पश्चात् ही वहाँ कौआ आया। चारों ओर जश्न का माहौल देखकर वह चौंका। उसने पूछा, “भाई, यहाँ किस उत्सव की तैयारी हो रही है?”

पक्षियों ने उल्लू के राजा बनने की बात बताई। कौआ चीखा, “मुझे सभा में क्यों नहीं बुलाया गया? क्या मैं पक्षी नहीं हूँ?”

मोर ने उत्तर दिया, “यह जंगली पक्षियों की सभा है। तुम तो अब अधिकतर कस्बों व शहरों में रहने लगे हो। तुम्हारा हमसे क्या वास्ता?”

उल्लू के राजा बनने की बात सुनकर कौआ जल-भुन गया था। वह सिर पटकने लगा और काँ-काँ करने लगा, “अरे, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, जो उल्लू को राजा बनाने लगे? वह चूहे खाकर जीता है और यह मत भूलो कि उल्लू केवल रात को बाहर निकलता है। अपनी समस्याएँ और फरियाद लेकर किसके पास जाओगे? दिन को तो वह मिलेगा नहीं।”

कौए की बातों का पक्षियों पर असर होने लगा। वे कानाफूसी करने लगे कि शायद उल्लू को राजा बनाने का निर्णय कर उन्होंने गलती की है। धीरे-धीरे सारे पक्षी वहाँ से खिसकने लगे। जब उल्लू लक्ष्मी पूजन कर पुजारियों के साथ लौटा तो सारा राज्याभिषेक स्थल सूना पड़ा था। उल्लू घुघुआया, “सब कहाँ गए?”

उल्लू की सेविका खंडरिच पेड़ पर से बोली, “कौआ आकर सबको उल्टी पट्टी पढ़ा गया। सब चले गए। अब कोई राज्याभिषेक नहीं होगा।”

उल्लू चोंच पीसकर रह गया। राजा बनने का सपना चूर-चूर हो गया। तब से उल्लू कौओं का बैरी बन गया और देखते ही उन पर झपटता है।

सीख : रंग में भंग डालनेवाले उम्र भर की दुश्मनी मोल ले बैठते हैं।



रँग सियार

पुराने समय की बात है। एक सियार जंगल में एक पुराने पेड़ के नीचे खड़ा था। एकाएक पेड़ हवा के तेज झोंके से गिर पड़ा। सियार उसकी चपेट में आ गया और बुरी तरह घायल हो गया। वह किसी तरह घिसटता-घिसटता अपनी माँद तक पहुँचा। कई दिन बाद वह माँद से बाहर आया। उसे भूख लग रही थी। शरीर कमजोर हो गया था। तभी उसे एक खरगोश नजर आया। उसे दबोचने के लिए वह झपटा। सियार कुछ दूर भागकर हाँफने लगा। उसके शरीर में जान ही कहाँ रह गई थी? फिर उसने एक बटेर का पीछा करने की कोशिश की। यहाँ भी वह असफल रहा। हिरण का पीछा करने की तो उसकी हिम्मत भी न हुई। वह खड़ा सोचने लगा। शिकार वह कर नहीं पा रहा था। भूखों मरने की नौबत आ गई समझो। क्या किया जाए? वह इधर-उधर घूमने लगा, पर कहीं कोई मरा जानवर नहीं मिला। घूमता-घूमता वह एक बस्ती में आ गया। उसने सोचा कि शायद कोई मुरगी या उसका बच्चा हाथ लग जाए। सो वह इधर-उधर गलियों में घूमने लगा।

तभी कुत्ते भौं-भौं करते उसके पीछे पड़ गए। सियार को जान बचाने के लिए भागना पड़ा। गलियों में घुसकर उनको छकाने की कोशिश करने लगा, पर कुत्ते तो कस्बे की गली-गली से परिचित थे। सियार के पीछे पड़े कुत्तों की टोली बढ़ती जा रही थी और सियार के कमजोर शरीर का बल समाप्त होता जा रहा था। सियार भागता हुआ रंगरेजों की बस्ती में आ पहुँचा। वहाँ उसे एक घर के सामने एक बड़ा ड्रम नजर आया। वह जान बचाने के लिए उसी ड्रम में कूद पड़ा। ड्रम में रंगरेज ने कपड़े रंगने के लिए रंग घोल रखा था।



कुत्तों का टोला भौंकता हुआ आगे चला गया। सियार साँस रोककर रंग में डूबा रहा। वह केवल साँस लेने के लिए अपनी थूथनी बाहर निकालता। जब उसे पूरा यकीन हो गया कि अब कोई खतरा नहीं है तो वह बाहर निकला। वह रंग में भीग चुका था। जंगल में पहुँचकर उसने देखा कि उसके शरीर का रंग नीला हो गया है। उस ड्रम में रंगरेज ने नीला रंग घोल रखा था। उसके नीले रंग को जो भी जंगली जीव देखता, वह भयभीत हो जाता। उनको खौफ से काँपते देखकर रँग सियार के दुष्ट दिमाग में एक योजना आई।

रँग सियार ने डरकर भागते जीवों को आवाज दी, “भाइयो, भागो मत मेरी बात सुनो।”

उसकी बात सुनकर सभी भागते जानवर ठिठके।

उनके ठिठकने का रँग सियार ने फायदा उठाया और बोला, “देखो, देखो मेरा रंग। ऐसा रंग किसी जानवर का धरती पर है? नहीं न। मतलब समझो। भगवान् ने मुझे यह खास रंग देकर तुम्हारे पास भेजा है। तुम सब जानवरों को बुला लाओ तो मैं भगवान् का संदेश सुनाऊँ।”

उसकी बातों का सब पर गहरा असर पड़ा। वे जंगल के दूसरे जानवरों को बुला लाए। जब सब आ गए तो रँग

सियार एक ऊँचे पत्थर पर चढ़कर बोला, “वन्य प्राणियो, प्रजापति ब्रह्मा ने मुझे खुद अपने हाथों से इस अलौकिक रंग का प्राणी बनाकर कहा कि संसार में जानवरों का कोई शासक नहीं है, तुम्हें जाकर जानवरों का राजा बनकर उनका कल्याण करना है। तुम्हारा नाम सम्राट् ककुदुम होगा। तीनों लोकों के वन्य जीव तुम्हारी प्रजा होंगे। अब तुम लोग अनाथ नहीं रहे। मेरी छत्रच्छाया में निर्भय होकर रहो।”

सभी जानवर वैसे ही सियार के अजीब रंग से चकराए हुए थे। उसकी बातों ने तो जादू का काम किया। शेर, बाघ व चीते की भी ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गई। उसकी बात काटने की किसी में हिम्मत नहीं हुई। देखते-ही-देखते सारे जानवर उसके चरणों में लोटने लगे और एक स्वर में बोले, “हे ब्रह्मा के दूत, प्राणियों में श्रेष्ठ ककुदुम, हम आपको अपना सम्राट् स्वीकार करते हैं। भगवान् की इच्छा का पालन करके हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।”



एक बूढ़े हाथी ने कहा, “हे सम्राट्, अब हमें बताइए कि हमारा क्या कर्तव्य है?”

रँग सियार सम्राट् की तरह पंजा उठाकर बोला, “तुम्हें अपने सम्राट् की खूब सेवा और आदर करना चाहिए। उसे कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए। हमारे खाने-पीने का शाही प्रबंध होना चाहिए।”

शेर ने सिर झुकाकर कहा, “महाराज, ऐसा ही होगा। आपकी सेवा करके हमारा जीवन धन्य हो जाएगा।”

बस, सम्राट् ककुदुम बने रँग सियार के शाही ठाठ हो गए। वह राजसी शान से रहने लगा।

कई लोमड़ियाँ उसकी सेवा में लगी रहतीं, भालू पंखा झुलाता। सियार जिस जीव का मांस खाने की इच्छा जाहिर करता, उसकी बलि दी जाती।

जब सियार घूमने निकलता तो हाथी आगे-आगे सूँड़ उठाकर बिगुल की तरह चिंघाड़ता चलता। दो शेर उसके दोनों ओर बाँड़ी गार्ड की तरह होते।

रोज ककुदुम का दरबार भी लगता। रँग सियार ने एक चालाकी यह कर दी थी कि सम्राट् बनते ही सियारों को शाही आदेश जारी कर उस जंगल से भगा दिया था। उसे अपनी जाति के जीवों द्वारा पहचान लिये जाने का खतरा था।

एक दिन सम्राट् ककुदुम खूब खा-पीकर अपनी शाही माँद में आराम कर रहा था कि उजाला देखकर उठा। बाहर आया, चाँदनी रात खिली थी। पास के जंगल में सियारों की टोलियाँ ‘हू-हू’ कर रही थी। उस आवाज को सुनते ही ककुदुम अपना आपा खो बैठा। उसके जन्मजात स्वभाव ने जोर मारा और वह भी मुँह उठाकर सियारों के स्वर में स्वर मिलाकर ‘हू-हू’ करने लगा।

शेर और बाघ ने उसे ‘हू-हू’ करते देख लिया। वे चौंके, बाघ बोला, “अरे, यह तो सियार है। हमें धोखा देकर सम्राट् बना रहा। मारो नीच को।”

शेर और बाघ उसकी ओर लपके और देखते-ही-देखते उसकी टिक्का-बोटी कर डाली।

सीख : झूठ अस्थायी होता है।



सच्ची मित्रता

बहुत समय पहले की बात है, एक सुंदर हरे-भरे वन में चार मित्र रहते थे—चूहा, कौआ, हिरण और कछुआ। अलग-अलग जाति का होने के बावजूद उनमें बहुत घनिष्ठता थी। चारों एक-दूसरे पर जान छिड़कते थे। चारों घुल-मिलकर रहते, खूब बातें करते और खेलते। वन में एक निर्मल सरोवर था, जिसमें वह कछुआ रहता था। सरोवर के तट के पास ही जामुन का एक बड़ा पेड़ था। उसी पर बने घोंसले में कौआ रहता था। पेड़ के नीचे जमीन में बिल बनाकर चूहा रहता था और निकट ही घनी झाड़ियों में हिरण का बसेरा था। दिन को कछुआ तट की रेत में धूप सेंकता रहता और पानी में डुबकियाँ लगाता। बाकी तीन मित्र भोजन की तलाश में निकल पड़ते और दूर तक घूमकर सूर्यास्त के समय लौट आते। चारों मित्र इकट्ठे होते, एक-दूसरे के गले लगते, खेलते और धमा-चौकड़ी मचाते।

एक दिन शाम को चूहा और कौआ तो लौट आए, परंतु हिरण नहीं लौटा। तीनों मित्र बैठकर उसकी राह देखने लगे। कछुआ भरीए गले से बोला, “वह तो रोज तुम दोनों से भी पहले लौट आता था, आज पता नहीं क्या बात हो गई, जो अब तक नहीं आया। मेरा तो दिल डूबा जा रहा है।”

चूहे ने चिंतित स्वर में कहा, “हाँ, बात बहुत गंभीर है। जरूर वह किसी मुसीबत में पड़ गया है। अब हम क्या करें?”



कौवे ने ऊपर देखते हुए अपनी चोंच खोली, “मित्रो, वह जिधर चरने जाता है, उधर मैं उड़कर देख आता, पर अँधेरा घिरने लगा है। नीचे कुछ नजर नहीं आएगा। हमें सुबह तक प्रतीक्षा करनी होगी। सुबह होते ही मैं उड़कर जाऊँगा और उसकी कुछ खबर लाकर तुम्हें दूँगा।”

कछुए ने सिर हिलाया, “अपने मित्र की कुशलता जाने बिना रात को नींद कैसे आएगी? दिल को चैन कैसे पड़ेगा? मैं तो उस ओर अभी चल पड़ता हूँ, मेरी चाल भी बहुत धीमी है। तुम दोनों सुबह आ जाना।”

चूहा बोला, “मुझसे भी हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठा जाएगा। मैं भी कछुए भाई के साथ चल सकता हूँ। कौए भाई, तुम पौ फटते ही चल पड़ना।”

कछुआ और चूहा तो चल दिए। कौवे ने रात आँखों में काटी। जैसे ही पौ फटी, कौआ भी उड़ चला। उड़ते-उड़ते चारों ओर नजर डालता जा रहा था। आगे एक स्थान पर कछुआ और चूहा जाते नजर आए। कौवे ने काँ-काँ करके उन्हें सूचना दी कि उन्हें देख लिया है और वह खोज में आगे जा रहा है। अब कौवे ने हिरण को पुकारना भी

शुरू किया, “मित्र हिरण, तुम कहाँ हो? आवाज दो मित्र।”

तभी उसे किसी के रोने की आवाज सुनाई दी। स्वर उसके मित्र हिरण जैसा था। आवाज की दिशा में उड़कर वह सीधा उस जगह पहुँचा, जहाँ हिरण एक शिकारी के जाल में फँसा छटपटा रहा था। हिरण ने रोते हुए बताया कि कैसे एक निर्दयी शिकारी ने वहाँ जाल बिछा रखा था। दुर्भाग्यवश वह जाल न देख पाया और फँस गया। हिरण सुबका, “शिकारी आता ही होगा वह मुझे पकड़कर ले जाएगा और मेरी कहानी खत्म समझो। मित्र कौवे! तुम चूहे और कछुए को भी मेरा अंतिम नमस्कार कहना।”

कौआ बोला, “मित्र, हम जान की बाजी लगाकर भी तुम्हें छुड़ा लेंगे।” हिरण ने निराशा व्यक्त की, “लेकिन तुम ऐसा कैसे कर पाओगे?”

कौवे ने पंख फड़फड़ाए, “सुनो, मैं अपने मित्र चूहे को पीठ पर बिठाकर ले आता हूँ। वह अपने पैने दाँतों से जाल कुतर देगा।”

हिरण को आशा की किरण दिखाई दी। उसकी आँखें चमक उठीं, “तो मित्र, चूहे भाई को शीघ्र ले आओ।”

कौआ उड़ा और तेजी से वहाँ पहुँचा, जहाँ कछुआ तथा चूहा आ पहुँचे थे। कौवे ने समय नष्ट किए बिना बताया, “मित्रो, हमारा मित्र हिरण एक दुष्ट शिकारी के जाल में कैद है। जान की बाजी लगी है। शिकारी के आने से पहले हमने उसे न छुड़ाया तो वह मारा जाएगा।”

कछुआ हकलाया, “उसके लिए हमें क्या करना होगा? जल्दी बताओ?”

चूहे के तेज दिमाग ने कौवे का इशारा समझ लिया था, “घबराओ मत कौवे भाई, मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर हिरण के पास ले चलो।”

चूहे ने जाल कुतरकर हिरण को मुक्त कर दिया। मुक्त होते ही हिरण ने अपने मित्रों को गले लगा लिया और रूँधे गले से उन्हें धन्यवाद दिया। तभी कछुआ भी वहाँ आ पहुँचा और खुशी में शामिल हो गया।

हिरण बोला, “मित्र, मैं भाग्यशाली हूँ, जिसे ऐसे सच्चे मित्र मिले हैं।”

चारों मित्र भाव-विभोर होकर खुशी से नाचने लगे। एकाएक, हिरण चौंका और उसने मित्रों को चेतावनी दी, “भाइयो, देखो वह जालिम शिकारी आ रहा है। फौरन छिप जाओ।”

चूहा फौरन पास के एक बिल में घुस गया। कौआ उड़कर पेड़ की ऊँची डाल पर जा बैठा। हिरण छलाँग लगाकर झाड़ी में जा घुसा व ओझल हो गया। परंतु कछुआ दो कदम भी न चल पाया था कि शिकारी आ धमका। जाल को कटा देखकर उसने अपना माथा पीटा, “क्या फँसा था और किसने काटा?” यह जानने के लिए वह पैरों के निशानों के सुराग ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर देख ही रहा था कि उसकी नजर रेंगकर जाते कछुए पर पड़ी। उसकी आँखें चमक उठीं, “वाह! भागते चोर की लँगोटी ही सही।”

उसने कछुए को उठाकर अपने थैले में डाला और जाल समेटकर चलने लगा। कौवे ने तुरंत हिरण व चूहे को बुलाकर कहा, “मित्रो, हमारे मित्र कछुए को शिकारी थैले में डालकर ले जा रहा है।”

चूहा बोला, “हमें अपने मित्र को छुड़ाना चाहिए। लेकिन कैसे?”



इस बार हिरण ने समस्या का हल सुझाया, “मित्रो, हमें एक चाल चलनी होगी। मैं लँगड़ाता हुआ शिकारी के आगे से निकलूँगा। मुझे लँगड़ा जान वह मुझे पकड़ने के लिए कछुए वाला थैला छोड़ मेरे पीछे दौड़ेगा। मैं उसे दूर ले जाकर चकमा दूँगा। इस बीच चूहा भाई थैले को कुतरकर कछुए को आजाद कर देगा। बस।”

योजना अच्छी थी। लँगड़ाकर चलते हिरण को देख शिकारी की बाँछें खिल उठीं। वह थैला पटककर हिरण के पीछे भागा। हिरण लँगड़ाने का नाटक कर घने वन की ओर गया और फिर चौकड़ी भरता ‘यह जा, वह जा’ हो गया। शिकारी दाँत पीसता रह गया। अब कछुए से ही काम चलाने का इरादा बनाकर लौटा तो उसे थैला खाली मिला। उसमें छेद था। शिकारी मुँह लटकाकर खाली हाथ लौट गया।

सीख : मित्रता सच्ची हो तो जीवन में मुसीबतों का आसानी से सामना किया जा सकता है।



बिगडैल साँड़

एक किसान के पास एक बिगडैल साँड़ था। उसने कई पशु सींग मारकर घायल कर दिए। तंग आकर आखिर उसने साँड़ को जंगल की ओर खदेड़ दिया।

साँड़ जिस जंगल में पहुँचा, वहाँ ख़ूब हरी घास उगी थी। आजाद होने के बाद साँड़ के पास दो ही काम रह गए। ख़ूब खाना, हुंकारना तथा पेड़ों के तनों में सींग फँसाकर जोर-आजमाइश करना। साँड़ पहले से भी अधिक तगड़ा हो गया। सारे शरीर में ऐसी मांसपेशियाँ उभरीं जैसे चमड़ी से बाहर छलक ही पड़ेंगी। पीठ पर कंधों के ऊपर की गाँठ बढ़ते-बढ़ते धोबी के कपड़ों के गट्ठर जितनी बड़ी हो गई। गले में चमड़ी व मांस की तहों की तहें लटकने लगीं।

उसी वन में एक गीदड़ व गीदड़ी का जोड़ा रहता था, जो बड़े जानवरों द्वारा छोड़े शिकार को खाकर गुजारा करता था। स्वयं वह केवल जंगली चूहों आदि का ही शिकार कर पाते थे।

संयोग से एक दिन वह मतवाला साँड़ झूमता हुआ उधर ही आ निकला, जिधर गीदड़-गीदड़ी रहते थे। गीदड़ी ने उस साँड़ को देखा तो उसकी आँखें फटी-की-फटी रह गईं। उसने आवाज देकर गीदड़ को बुलाया और बोली, “देखो तो इसकी मांसपेशियाँ। इसका मांस कितना स्वादिष्ट होगा। आह, भगवान् ने हमें क्या स्वादिष्ट तोहफा भेजा है।”



गीदड़ ने गीदड़ी को समझाया, “सपने देखना छोड़ो। उसका मांस कितना ही चरबीला और स्वादिष्ट हो, हमें क्या लेना।”

गीदड़ी भड़क उठी, “तुम तो भौंदू हो। देखते नहीं, उसकी पीठ पर जो चरबी की गाँठ है, वह किसी भी समय गिर जाएगी। हमें उठाना भर होगा और इसके गले में जो मांस की तहें नीचे लटक रही हैं, वह किसी भी समय टूटकर नीचे गिर सकती हैं। बस हमें इसके पीछे-पीछे चलते रहना होगा।”

गीदड़ बोला, “भाग्यवान! यह लालच छोड़ो।”

गीदड़ी जिद करने लगी, “अपनी कायरता से तुम हाथ आया यह कीमती मौका गँवाना चाहते हो। तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। मैं अकेली कितना खा पाऊँगी?”

गीदड़ी की हठ के सामने गीदड़ की एक न चली। दोनों ने साँड़ के पीछे-पीछे चलना शुरू कर दिया। कई दिन हो गए, पर साँड़ के शरीर से कुछ नहीं गिरा। गीदड़ ने बार-बार गीदड़ी को समझाने की कोशिश की, “गीदड़ी, घर चलते हैं, एक-दो चूहे मारकर पेट की आग बुझाते हैं।”

पर गीदड़ी की अक्ल पर तो परदा पड़ गया था। वह न मानी, “हम खाएँगे तो इसी का मोटा-ताजा स्वादिष्ट

मांस। कभी-न-कभी तो यह गिरेगा ही।”

बस दोनों साँड़ के पीछे लगे रहे। आखिर एक दिन भूखे-प्यासे दोनों ही गिर पड़े और फिर कभी नहीं उठे।

सीख : लोभ का फल सदैव बुरा होता है।



चींटी सेना

किसी वन में एक बहुत बड़ा अजगर रहता था। वह बहुत अभिमानी और अत्यंत क्रूर था। जब वह अपने बिल से निकलता तो सब जीव उससे डरकर भाग खड़े होते। उसका मुँह इतना विकराल था कि खरगोश तक को निगल जाता था। एक बार अजगर शिकार की तलाश में घूम रहा था। सारे जीव तो उसे बिल से निकलते देख ही भाग चुके थे। उसे कुछ न मिला तो वह क्रोधित होकर फुफकारने लगा और इधर-उधर खाक छानने लगा। वहीं निकट में एक हिरणी अपने नवजात शिशु को पत्तियों के ढेर के नीचे छिपाकर स्वयं भोजन की तलाश में दूर निकल गई थी।

अजगर की फुफकार से सूखी पत्तियाँ उड़ने लगीं और हिरणी का बच्चा नजर आने लगा। अजगर की नजर उस पर पड़ी। हिरणी का बच्चा उस भयानक जीव को देखकर इतना डर गया कि उसके मुँह से चीख तक न निकल पाई। अजगर ने देखते-ही-देखते नवजात हिरण के बच्चे को निगल लिया। तब तक हिरणी भी लौट आई थी, पर वह क्या करती? आँखों में आँसू भर, जड़ होकर दूर से अपने बच्चे को काल का ग्रास बनते देखती रही।

हिरणी के दुःख का ठिकाना न रहा। उसने किसी-न-किसी तरह अजगर से बदला लेने की ठान ली। हिरणी की एक नेवले से दोस्ती थी। शोक में डूबी हिरणी अपने मित्र नेवले के पास गई और रो-रोकर उसे अपनी दुःख भरी कथा सुनाई। नेवले को भी बहुत दुःख हुआ। वह दुःख भरे स्वर में बोला, “मित्र, मेरे बस में होता तो मैं उस नीच अजगर के सौ टुकड़े कर डालता। पर क्या करें, वह छोटा-मोटा साँप नहीं है, जिसे मैं मार सकूँ, वह तो एक अजगर है। अपनी पूँछ की फटकार से ही मुझे अधमरा कर देगा। लेकिन यहाँ पास ही में चींटियों की एक बाँबी है। वहाँ की रानी मेरी मित्र है। उससे सहायता माँगनी चाहिए।”



हिरणी ने निराश स्वर में विलाप किया, “पर जब तुम्हारे जितना बड़ा जीव उस अजगर का कुछ नहीं बिगाड़ सकता तो वह छोटी सी चींटी क्या कर लेंगी?”

नेवले ने कहा, “ऐसा मत सोचो। उसके पास चींटियों की एक बहुत बड़ी सेना है। संगठन में बड़ी शक्ति होती है।”

हिरणी को आशा की किरण नजर आई। नेवला हिरणी को लेकर चींटी रानी के पास गया और उसे सारी कहानी सुनाई। चींटी रानी ने सोच-विचारकर कहा, “हम तुम्हारी सहायता करेंगे। हमारी बाँबी के पास एक सँकरीला नुकीले पत्थरों भरा रास्ता है। तुम किसी तरह अजगर को उस रास्ते पर ले आओ। बाकी काम मेरी सेना पर छोड़ दो।”

नेवले को अपनी मित्र चींटी रानी पर पूरा विश्वास था, इसलिए वह अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार हो गया। अगले दिन नेवला अजगर के बिल के पास जाकर बोलने लगा। अपने शत्रु की बोली सुनते ही अजगर क्रोध में भरकर अपने बिल से बाहर आया। नेवला उसी सँकरे रास्तेवाली दिशा में दौड़ा। अजगर ने पीछा किया। अजगर

रुकता तो नेवला मुड़कर फुफकारता और अजगर को गुस्सा दिलाकर फिर पीछा करने को मजबूर करता। इस प्रकार अजगर उस पथरीले रास्ते पर आ गया और नुकीले पत्थरों से उसका शरीर छिलने लगा और जगह-जगह से खून टपकने लगा था।

उसी समय चींटियों की सेना ने उस पर हमला कर दिया। चींटियाँ उसके शरीर पर चढ़कर छिले स्थानों के मांस को काटने लगीं। अजगर तड़प उठा। अपना शरीर पटकने लगा, जिससे और मांस छिलने लगा और चींटियों को आक्रमण के लिए नए-नए स्थान मिलने लगे। अजगर चींटियों का क्या बिगाड़ता? वे हजारों की गिनती में उस पर टूट पड़ रही थीं। कुछ ही देर में क्रूर अजगर ने तड़प-तड़पकर दम तोड़ दिया।

सीख : संगठन शक्ति बड़े-बड़ों को धूल चटा देती है।



सच्चा राजा

कंचन वन में शेरसिंह का राज समाप्त हो चुका था, पर वहाँ बिना राजा के स्थिति ऐसी हो गई थी जैसे जंगलराज हो। जिसकी जो मरजी वह कर रहा था। वन में अशांति, मार-काट और गंदगी इतनी फैल गई कि वहाँ जानवरों का रहना मुश्किल हो गया। कुछ जानवर शेरसिंह को याद कर रहे थे, “जब तक शेरसिंह ने राजपाट सँभाला, सारे वन में कितनी शांति और एकता थी। अब अगर ऐसे ही चलता रहा तो एक दिन यह वन ही समाप्त हो जाएगा और हम सब जानवर बेघर होकर मारे जाएँगे।”

गोलू भालू बोला, “कोई-न-कोई उपाय तो करना ही होगा। क्यों न हम आम सहमति से अपना कोई राजा चुन लें, जो शेरसिंह की तरह हमें पुनः एक जंजीर में बाँधे और वन में एक बार फिर से अमन-शांति के स्वर गूँज उठे।” सभी गोलू भालू की बात से संतुष्ट हो गए। पर समस्या यह थी कि राजा किसे बनाया जाए? सभी जानवर स्वयं को दूसरे से बड़ा बता रहे थे।

सोनू मोर बोला, “क्यों न एक पखवाड़े तक सभी को कुछ-न-कुछ काम दे दिया जाए, जो अपने काम को सबसे अच्छे ढंग से करेगा, उसी को राजा बना दिया जाएगा।”

सभी सहमत हो गए और फिर सभी जानवरों को उनकी योग्यता के आधार पर काम दे दिया गया। बिंपी लोमड़ी को मिट्टी हटाने का काम दिया गया तो भोलू बंदर को पेड़ों पर लगे जाले हटाने का, सोनी हाथी को पत्थर उठाकर गड़ढे में डालने का काम सौंपा गया और मोनू खरगोश को घास की सफाई की जिम्मेदारी।



जब एक पखवाड़ा बीत गया तो सभी जानवर अपने-अपने कार्यों का ब्योरा लेकर एक मैदान में एकत्रित हुए। सभी जानवरों ने अपना काम बड़ी सफाई और मेहनत से पूरा किया था। सिर्फ सोनू हाथी था, जिसने एक भी पत्थर गड़ढे में नहीं डाला था।

अब एक समस्या फिर खड़ी हो गई कि आखिर किसके काम को सबसे अच्छा माना जाए। बुद्धिमान मोनू खरगोश ने युक्ति सुझाई, “क्यों न मतदान करा लिया जाए, जिसे सबसे ज्यादा मत मिलेंगे, उसे ही राजा चुन लेंगे।”

अगले दिन सुबह-सुबह चुनाव रख लिया गया और एक बड़े मैदान में सभी पशु-पक्षी मत देने के लिए उपस्थित हो गए। मतदान समाप्त होने के बाद मतों को गिनने का काम शुरू हुआ। यह क्या! सोनू हाथी गिनती में सबसे आगे चल रहा था और जब मतों की गिनती समाप्त हुई तो सोनू हाथी सबसे ज्यादा मतों से विजयी हो गया। सभी जानवर एक-दूसरे का मुँह ताक रहे थे।

तभी पक्षीराज गरुण वहाँ उपस्थित हुए और उपस्थित जानवरों को संबोधित करते हुए बोले, 'सोनू हाथी प्रतिदिन पत्थर लेकर गड्ढे तक जाता था, किंतु जब उसने देखा कि उस गड्ढे में मेरे अंडे रखे हैं तो वह पत्थरों को उसमें न डालकर पास ही जमीन पर एकत्रित करता रहा। सोनू ने अपने राजा बनने के लालच को छोड़ एक जीव को बचाना ज्यादा उपयोगी समझा। उसकी इस परोपकार की भावना को देखकर हम पक्षियों ने तय किया कि जो अपने लालच को छोड़कर दूसरों के सुख-दुःख का ध्यान रखे, वही सच्चे तौर पर राजा बनने का अधिकारी है और चूँकि वन में पक्षियों की संख्या पशुओं से अधिक थी, इसलिए सोनू हाथी चुनाव जीत गया।'।

सबक : सच्चा राजा वही है, जो परोपकार की भावना को सर्वोच्च स्थान दे।



मुसीबत में दोस्ती की परख

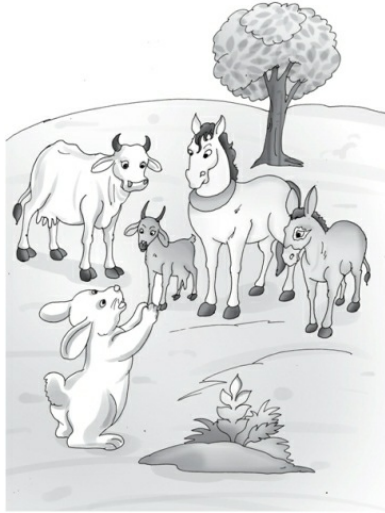
एक जंगल था। गाय, घोड़ा, गधा और बकरी वहाँ चरने आते थे। उन चारों में मित्रता हो गई। वह चरते-चरते आपस में कहानियाँ कहा करते थे। पेड़ के नीचे एक खरगोश का घर था। एक दिन उसने उन चारों की मित्रता देखी। खरगोश पास जाकर कहने लगा, “तुम लोग मुझे भी मित्र बना लो।”

उन्होंने कहा, “अच्छा।” तब खरगोश बहुत प्रसन्न हुआ। खरगोश हर रोज उनके पास आकर बैठ जाता। कहानियाँ सुनकर वह भी मन बहलाया करता था। एक दिन खरगोश उनके पास बैठा कहानियाँ सुन रहा था, अचानक शिकारी कुत्तों की आवाज सुनाई दी। खरगोश ने गाय से कहा, “तुम मुझे पीठ पर बिठा लो। जब शिकारी कुत्ते आएँ तो उन्हें सींगों से मारकर भगा देना।”

गाय ने कहा, “मेरा तो अब घर जाने का समय हो गया है।”

तब खरगोश घोड़े के पास गया। कहने लगा, “बड़े भाई ! तुम मुझे पीठ पर बिठा लो और शिकारी कुत्तों से बचाओ। तुम तो एक दुलत्ती मारोगे तो कुत्ते भाग जाएँगे।”

घोड़े ने कहा, “मुझे बैठाना नहीं आता। मैं तो खड़े-खड़े ही सोता हूँ। मेरी पीठ पर कैसे चढ़ोगे? मेरे पाँव भी दुःख रहे हैं। इन पर नई नाल चढ़ी है। मैं दुलत्ती कैसे मारूँगा? तुम कोई और उपाय करो।”



तब खरगोश ने गधे के पास जाकर कहा, “मित्र गधे! तुम मुझे शिकारी कुत्तों से बचा लो। मुझे पीठ पर बिठा लो। जब कुत्ते आएँ तो दुलत्ती झाड़कर उन्हें भगा देना।”

गधे ने कहा, “मैं घर जा रहा हूँ। समय हो गया है। अगर मैं समय पर न लौटा, तो कुम्हार डंडे मार-मार कर मेरा कचूमर निकाल देगा।”

तब खरगोश बकरी की तरफ चला।

बकरी ने दूर से ही कहा, “छोटे भैया! इधर मत आना। मुझे शिकारी कुत्तों से बहुत डर लगता है। कहीं तुम्हारे साथ मैं भी न मारी जाऊँ।”

इतने में कुत्ते पास आ गए। खरगोश सिर पर पाँव रखकर भागा। कुत्ते इतनी तेज दौड़ न सके। खरगोश झाड़ी में जाकर छिप गया। वह मन में कहने लगा, ‘हमेशा अपने पर ही भरोसा करना चाहिए।’

सीख : दोस्ती की परख मुसीबत में ही होती है।



जाल

एक कुएँ में बहुत से मेढक रहते थे। उनके राजा का नाम था गंगदत्त। गंगदत्त बहुत झगड़ालू स्वभाव का था। आस-पास दो-तीन और भी कुएँ थे। उनमें भी मेढक रहते थे। हर कुएँ के मेढकों का अपना राजा था। हर राजा से किसी-न-किसी बात पर गंगदत्त का झगड़ा चलता ही रहता था। वह अपनी मूर्खता से कोई गलत काम करने लगता और बुद्धिमान मेढक रोकने की कोशिश करता तो मौका मिलते ही अपने पाले गुंडे मेढकों से पिटवा देता। कुएँ के मेढकों के मन में गंगदत्त के प्रति रोष बढ़ता ही जा रहा था।

एक दिन गंगदत्त पड़ोसी मेढक राजा से खूब झगड़ा। खूब तू-तू, मैं-मैं हुई। गंगदत्त ने अपने कुएँ में आकर बताया कि पड़ोसी राजा ने उसका अपमान किया है। अपमान का बदला लेने के लिए उसने अपने मेढकों को आदेश दिया कि पड़ोसी कुएँ पर हमला करें। सब जानते थे कि झगड़ा गंगदत्त ने ही शुरू किया होगा।

कुछ सयाने मेढकों तथा बुद्धिमानों ने एकजुट होकर एक स्वर में कहा, “राजन, पड़ोसी कुएँ में हमसे दुगने मेढक हैं। वे स्वस्थ व हमसे अधिक ताकतवर हैं। हम यह लड़ाई नहीं लड़ेंगे।”

गंगदत्त सन्न रह गया और बुरी तरह तिलमिला गया। मन-ही-मन में उसने ठान ली कि इन गद्दारों को भी सबक सिखाना होगा। गंगदत्त ने अपने बेटों को बुलाकर भड़काया, “बेटा, पड़ोसी राजा ने तुम्हारे पिता का घोर अपमान किया है। जाओ, पड़ोसी राजा के बेटों की ऐसी पिटाई करो कि वे पानी माँगने लग जाएँ।”

गंगदत्त के बेटे एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। आखिर बड़े बेटे ने कहा, “पिताजी, आपने कभी हमें टराने की इजाजत नहीं दी। टराने से ही मेढकों में बल आता है, हौसला आता है और जोश आता है। आप ही बताइए कि बिना हौसले और जोश के हम किसी की क्या पिटाई कर पाएँगे?”

अब गंगदत्त सबसे चिढ़ गया। एक दिन वह कुढ़ता और बड़बड़ाता कुएँ से बाहर निकलकर इधर-उधर घूमने लगा। उसे एक भयंकर नाग पास ही बने अपने बिल में घुसता नजर आया। उसकी आँखें चमकी। जब अपने ही दुश्मन बन गए हों तो दुश्मन को अपना बनाना चाहिए। यह सोचकर वह बिल के पास जाकर बोला, “नागदेव, मेरा प्रणाम।”

नागदेव फुफकारा, “अरे मेढक मैं तुम्हारा बैरी हूँ। तुम्हें खा जाता हूँ और तुम मेरे बिल के आगे आकर मुझे आवाज दे रहे हो।”

गंगदत्त टर्राया, “हे नाग, कभी-कभी शत्रुओं से ज्यादा अपने दुःख देने लगते हैं। मेरा अपनी जाति वालों और सगों ने इतना घोर अपमान किया है कि उन्हें सबक सिखाने के लिए मुझे तुम जैसे शत्रु के पास सहायता माँगने आना पड़ा है। तुम मेरी दोस्ती स्वीकार करो और मजे करो।”

नाग ने बिल से अपना सिर बाहर निकाला और बोला, “मजे, कैसे मजे?”

गंगदत्त ने कहा “मैं तुम्हें इतने मेढक खिलाऊँगा कि तुम मुटाते-मुटाते अजगर बन जाओगे।”

नाग ने शंका व्यक्त की, “पानी में मैं जा नहीं सकता। कैसे पकड़ूँगा मेढक?”



गंगदत्त ने ताली बजाई, “नाग भाई, यहीं तो मेरी दोस्ती तुम्हारे काम आएगी। मैंने पड़ोसी राजाओं के कुओं पर नजर रखने के लिए अपने जासूस मेढकों से गुप्त सुरंगें खुदवा रखी हैं। हर कुएँ तक उनका रास्ता जाता है। सुरंगें जहाँ मिलती हैं, वहाँ एक कक्ष है। तुम वहाँ रहना और जिस-जिस मेढक को खाने के लिए कहूँ, उन्हें खाते जाना।”

नाग गंगदत्त से दोस्ती के लिए तैयार हो गया, क्योंकि उसमें उसका लाभ-ही-लाभ था। एक मूर्ख बदले की भावना में अंधा होकर अपना ही दुश्मन हो जाए तो दुश्मन क्यों न इसका लाभ उठाए?

नाग गंगदत्त के साथ सुरंग कक्ष में जाकर बैठ गया। गंगदत्त ने पहले सारे पड़ोसी मेढक राजाओं और उनकी प्रजा को खाने के लिए कहा। नाग कुछ सप्ताह में सारे मेढकों को खा गया। जब सब समाप्त हो गए तो नाग गंगदत्त से बोला, “अब किसे खाऊँ? जल्दी बता। चौबीस घंटे पेट फुल रखने की आदत पड़ गई है।”

गंगदत्त ने कहा, “अब मेरे कुएँ के सभी सयानों और बुद्धिमान मेढकों को खाओ।”

वह खाए जा चुके तो प्रजा की बारी आई। गंगदत्त ने सोचा, “प्रजा की ऐसी-तैसी। हर समय कुछ-न-कुछ शिकायत करती रहती है। उनको खाने के बाद नाग ने खाना माँगा तो गंगदत्त बोला, “नागमित्र, अब केवल मेरा कुनबा और मेरे मित्र बचे हैं। खेल खत्म और मेढक हजम।”

नाग ने फन फैलाया और फुफकारने लगा, “मेढक, मैं अब कहीं नहीं जाने का। तू अब खाने का इंतजाम कर वरना हिस्स।”

गंगदत्त की बोलती बंद हो गई। उसने नाग को अपने मित्र खिलाए, फिर उसके बेटे नाग के पेट में गए। गंगदत्त ने सोचा कि मैं और मेढकी जिंदा रहे तो बेटे और पैदा कर लेंगे। बेटे खाने के बाद नाग फुफकारा, “और खाना कहाँ है? गंगदत्त ने डरकर मेढकी की ओर इशारा किया। गंगदत्त ने स्वयं के मन को समझाया, “चलो बूढ़ी मेढकी से छुटकारा मिला। नई जवान मेढकी से विवाह कर नया संसार बसाऊँगा।”

मेढकी को खाने के बाद नाग ने मुँह फाड़ा, “खाना।”

गंगदत्त ने हाथ जोड़े, “अब तो केवल मैं बचा हूँ। तुम्हारा दोस्त गंगदत्त। अब लौट जाओ।”

नाग बोला, “तू कौन सा मेरा मामा लगता है।” और उसे हड़प गया।

सीख : जैसी करनी वैसी भरनी।



नादान उल्लू

एक जंगल में पहाड़ की चोटी पर एक किला बना था। किले के एक कोने के साथ बाहर की ओर एक ऊँचा विशाल देवदार का पेड़ था। किले में उस राज्य की सेना की एक टुकड़ी तैनात थी। देवदार के पेड़ पर एक उल्लू रहता था। वह भोजन की तलाश में नीचे घाटी में फैले ढलवाँ चरागाहों में आता। चरागाहों की लंबी घास व झाड़ियों में कई छोटे-मोटे जीव व कीट-पतंगे मिलते, जिन्हें उल्लू अपना भोजन बनाता। निकट ही एक बड़ी झील थी, जिसमें हंसों का निवास था। उल्लू पेड़ पर बैठा झील को निहारा करता। उसे हंसों का तैरना व उड़ना मंत्रमुग्ध करता। वह सोचा करता कि कितना शानदार पक्षी है हंस। एकदम दूध सा सफेद, गुलगुला शरीर, सुराहीदार गरदन, सुंदर मुख व तेजस्वी आँखें। उसकी बड़ी इच्छा होती किसी हंस से उसकी दोस्ती हो जाए।

एक दिन उल्लू पानी पीने के बहाने झील के किनारे उगी एक झाड़ी पर उतरा। निकट ही एक बहुत शालीन व सौम्य हंस पानी में तैर रहा था। हंस तैरता हुआ झाड़ी के निकट आया।

उल्लू ने बात करने का बहाना ढूँढ़ा, “हंसजी, आपकी आज्ञा हो तो पानी पी लूँ। बड़ी प्यास लगी है।”

हंस ने चौंककर उसे देखा और बोला, “मित्र! पानी प्रकृति द्वारा सबको दिया गया वरदान है। उस पर किसी एक का अधिकार नहीं।”

उल्लू ने पानी पीया। फिर सिर हिलाया जैसे उसे निराशा हुई हो। हंस ने पूछा, “मित्र! असंतुष्ट नजर आते हो। क्या प्यास नहीं बुझी?”

उल्लू ने कहा, “हे हंस! पानी की प्यास तो बुझ गई, पर आपकी बातों से मुझे ऐसा लगा कि आप नीति व ज्ञान के सागर हैं। मुझमें उसकी प्यास जग गई है। वह कैसे बुझेगी?”

हंस मुसकराया, “मित्र, आप कभी भी यहाँ आ सकते हैं। हम बातें करेंगे। इस प्रकार मैं जो जानता हूँ, वह आपका हो जाएगा और मैं भी आपसे कुछ सीखूँगा।”

इसके पश्चात् हंस व उल्लू रोज मिलने लगे। एक दिन हंस ने उल्लू को बता दिया कि वह वास्तव में हंसों का राजा हंसराज है। अपना असली परिचय देने के बाद हंस अपने मित्र को निमंत्रण देकर अपने घर ले गया। शाही ठाठ थे। खाने के लिए कमल व नरगिस के फूलों के व्यंजन परोसे गए और जाने क्या-क्या दुर्लभ खाद्य थे, उल्लू को पता ही नहीं लगा। बाद में सौंफ-इलाइची की जगह मोती पेश किए गए। उल्लू दंग रह गया।

अब हंसराज उल्लू को महल में ले जाकर खिलाने-पिलाने लगा। रोज दावत उड़ती। उसे डर लगने लगा कि किसी दिन साधारण उल्लू समझकर हंसराज दोस्ती न तोड़ ले, इसलिए स्वयं को हंसराज की बराबरी का बनाए रखने के लिए उसने झूठ-मूठ कह दिया कि वह भी उल्लूओं का राजा उल्लूकराज है। झूठ कहने के बाद उल्लू को लगा कि उसका भी फर्ज बनता है कि हंसराज को अपने घर बुलाए।

एक दिन उल्लू ने दुर्ग के भीतर होनेवाली गतिविधियों को गौर से देखा और उसके दिमाग में एक युक्ति आई। उसने दुर्ग की बातों को खूब ध्यान से समझा। सैनिकों के कार्यक्रम नोट किए। फिर वह चला हंस के पास। जब वह झील पर पहुँचा, तब हंसराज कुछ हंसनियों के साथ जल में तैर रहा था। उल्लू को देखते ही हंस बोला, “मित्र, आप इस समय?”



उल्लू ने उत्तर दिया, “हाँ मित्र! मैं आपको आज अपना घर दिखाने व अपना मेहमान बनाने के लिए ले जाने आया हूँ। मैं कई बार आपका मेहमान बना हूँ। मुझे भी सेवा का मौका दें।”

हंस ने टालना चाहा, “मित्र, इतनी जल्दी क्या है, फिर कभी चलेंगे।”

उल्लू ने कहा, “आज तो आपको लिए बिना नहीं जाऊँगा।”

हंसराज को उल्लू के साथ जाना ही पड़ा।

पहाड़ की चोटी पर बने किले की ओर इशारा कर उल्लू उड़ते-उड़ते बोला, “वह मेरा किला है।”

हंस बड़ा प्रभावित हुआ। वे दोनों जब उल्लू के आवास वाले पेड़ पर उतरे तो किले के सैनिकों की परेड शुरू होनेवाली थी। दो सैनिक बुर्ज पर बिगुल बजाने लगे। उल्लू दुर्ग के सैनिकों के दैनिक कार्यक्रम को याद कर चुका था, इसलिए ठीक समय पर हंसराज को ले आया था। उल्लू बोला, “देखो मित्र, आपके स्वागत में मेरे सैनिक बिगुल बजा रहे हैं। उसके बाद मेरी सेना परेड और सलामी देकर आपको सम्मानित करेगी।”

नित्य की तरह परेड हुई और झंडे को सलामी दी गई। हंस समझा सचमुच उसी के लिए यह सब हो रहा है। अतः हंस ने गद्गद होकर कहा, “धन्य हैं मित्र। आप तो एक शूरवीर राजा की भाँति राज कर रहे हैं।”

उल्लू ने हंसराज पर रोब डाला, “मैंने अपने सैनिकों को आदेश दिया है कि जब तक मेरे परम मित्र राजा हंसराज मेरे अतिथि हैं, तब तक इसी प्रकार रोज बिगुल बजे व सैनिकों की परेड निकले।”

उल्लू को पता था कि सैनिकों का यह रोज का काम है। दैनिक नियम है। हंस को उल्लू ने फल, अखरोट व बनफशा के फूल खिलाए। उनको वह पहले ही जमा कर चुका था। भोजन का महत्त्व नहीं रह गया। सैनिकों की परेड का जादू अपना काम कर चुका था। हंसराज के दिल में उल्लू मित्र के लिए बहुत सम्मान पैदा हो चुका था।

उधर सैनिक टुकड़ी को वहाँ से कूच करने के आदेश मिल चुके थे। दूसरे दिन सैनिक अपना सामान समेटकर जाने लगे तो हंस ने कहा, “मित्र, देखो आपके सैनिक आपकी आज्ञा लिये बिना कहीं जा रहे हैं।”

उल्लू हड़बड़ाकर बोला, “किसी ने उन्हें गलत आदेश दिया होगा। मैं अभी रोकता हूँ उन्हें।” ऐसा कह वह ‘हू-हू’ करने लगा।

सैनिकों ने उल्लू का घुघुआना सुना व अपशकुन समझकर जाना स्थगित कर दिया। दूसरे दिन फिर वही हुआ। सैनिक जाने लगे तो उल्लू घुघुआया। सैनिकों के नायक ने क्रोधित होकर सैनिकों को मनहूस उल्लू को तीर मारने का आदेश दिया। एक सैनिक ने तीर छोड़ा। तीर उल्लू की बगल में बैठे हंस को लगा। वह तीर खाकर नीचे गिरा व फड़फड़ाकर मर गया। उल्लू उसकी लाश के पास शोकाकुल हो विलाप करने लगा, “हाय, मैंने अपनी झूठी शान के चक्कर में अपना परम मित्र खो दिया। धिक्कार है मुझे।”

उल्लू को आस-पास की खबर से बेसुध होकर रोते देखकर एक सियार उस पर झपटा और उसका काम तमाम

कर दिया।

सीख : झूठी शान महँगी पड़ती है। कभी झूठी शान के चक्कर में न पड़ें।



झूठी भक्ति

किसी जंगल में बहुत समय पहले एक सियार रहता था। वह बहुत आलसी था। पेट भरने के लिए खरगोशों व चूहों का पीछा करना व उनका शिकार करना, उसे बड़ा भारी लगता था। शिकार करने में परिश्रम तो करना ही पड़ता है न। दिमाग उसका शैतानी था। यही तिकड़म लगाता रहता कि कैसे ऐसी जुगत लगाई जाए, जिससे बिना हाथ-पैर हिलाए भोजन मिलता रहे। खाया और सो गए। एक दिन उसी सोच में डूबा वह सियार एक झाड़ी में दुबका बैठा था।

बाहर चूहों की एक टोली उछल-कूद व भाग-दौड़ करने में लगी थी। उनमें एक मोटा सा चूहा था, जिसे दूसरे चूहे 'सरदार' कहकर बुला रहे थे और उसका आदेश मान रहे थे। सियार उन्हें देखता रहा। उसके मुँह से लार टपकती रही। फिर उसके दिमाग में एक तरकीब आई।

जब चूहे वहाँ से गए तो उसने दबे पाँव उनका पीछा किया। कुछ ही दूर उन चूहों के बिल थे। सियार वापस लौटा। दूसरे दिन प्रातः ही वह उन चूहों के बिल के पास जाकर एक टाँग पर खड़ा हो गया। उसका मुँह उगते सूरज की ओर था। आँखें बंद थीं।

चूहे बिलों से निकले तो सियार को उस अनोखी मुद्रा में खड़े देखकर वे बहुत चकित हुए। एक चूहे ने जरा सियार के निकट जाकर पूछा, “सियार मामा, तुम इस प्रकार एक टाँग पर क्यों खड़े हो?”



सियार एक आँख खोलकर बोला, “मूर्ख, तूने मेरे बारे में नहीं सुना कभी? मैं चारों टाँगें नीचे टिका दूँगा तो धरती मेरा बोझ नहीं सँभाल पाएगी। यह डोल जाएगी। साथ ही तुम सब नष्ट हो जाओगे। तुम्हारे ही कल्याण के लिए मुझे एक टाँग पर खड़े रहना पड़ता है।”

चूहों में खुसर-पुसर हुई। वे सियार के निकट आकर खड़े हो गए। चूहों के सरदार ने कहा, “हे महान् सियार, हमें अपने बारे में कुछ बताइए।”

सियार ने ढोंग रचा, “मैंने सैकड़ों वर्ष हिमालय पर्वत पर एक टाँग पर खड़े होकर तपस्या की। मेरी तपस्या समाप्त होने पर सभी देवताओं ने मुझ पर फूलों की वर्षा की। भगवान् ने प्रकट होकर कहा कि मेरे तप से मेरा भार इतना हो गया है कि मैं चारों पैर धरती पर रखूँ तो धरती गिरती हुई ब्रह्मांड को फोड़कर दूसरी ओर निकल जाएगी। धरती मेरी कृपा पर ही टिकी रहेगी। तबसे मैं एक टाँग पर ही खड़ा हूँ। मैं नहीं चाहता कि मेरे कारण दूसरे जीवों को कष्ट हो।”

चूहों का समूह महा तपस्वी सियार के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। एक चूहे ने पूछा, “तपस्वी मामा, आपने अपना मुँह सूरज की ओर क्यों कर रखा है?”

सियार ने उत्तर दिया, “सूर्य की पूजा के लिए।”

“और आपका मुँह क्यों खुला है?” दूसरे चूहे ने पूछा।

“हवा खाने के लिए! मैं केवल हवा खाकर जिंदा रहता हूँ। मुझे खाना खाने की जरूरत नहीं पड़ती। मेरे तप का बल हवा को ही पेट में भाँति-भाँति के पकवानों में बदल देता है।” सियार बोला।

उसकी इस बात को सुनकर चूहों पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। अब सियार की ओर से उनका सारा भय जाता रहा। वे उसके और निकट आ गए। अपनी बात का असर चूहों पर होता देख मक्कार सियार दिल-ही-दिल में खूब हँसा। अब चूहे महा तपस्वी सियार के भक्त बन गए। सियार एक टाँग पर खड़ा रहता और चूहे उसके चारों ओर बैठकर ढोलक, मजीरे, खड़ताल और चिमटे लेकर उसके भजन गाते।

भजन कीर्तन समाप्त होने के बाद चूहों की टोली भक्ति रस में डूबकर अपने बिलों में घुसने लगती तो सियार सबसे बाद के तीन-चार चूहों को दबोचकर खा जाता। फिर रातभर आराम करता, सोता और डकारें लेता।

सुबह होते ही फिर वह चूहों के बिलों के पास आकर एक टाँग पर खड़ा हो जाता और अपना नाटक चालू रखता। धीरे-धीरे चूहों की संख्या कम होने लगी। चूहों के सरदार की नजर से यह बात छिपी नहीं रही। एक दिन सरदार ने सियार से पूछ ही लिया, “हे महात्मा सियार, मेरी टोली के चूहे मुझे कम होते नजर आ रहे हैं। ऐसा क्यों हो रहा है?”

सियार ने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाया, “हे चतुर मूषक, यह तो होना ही था। जो सच्चे मन से मेरी भक्ति करेगा, वह सशरीर बैकुंठ को जाएगा। बहुत से चूहे भक्ति का फल पा रहे हैं।”

चूहों के सरदार ने देखा कि सियार मोटा हो गया है। कहीं उसका पेट ही तो वह बैकुंठ लोक नहीं है, जहाँ चूहे जा रहे हैं?

चूहों के सरदार ने बाकी बचे चूहों को चेताया और स्वयं उसने दूसरे दिन सबसे बाद में बिल में घुसने का निश्चय किया। भजन समाप्त होने के बाद चूहे बिलों में घुसे। सियार ने सबसे अंत के चूहे को दबोचना चाहा।

चूहों का सरदार पहले ही चौकन्ना था। वह दौंव मारकर सियार का पंजा बचा गया। असलियत का पता चलते ही वह उछलकर सियार की गरदन पर चढ़ गया और उसने बाकी चूहों को हमला करने के लिए कहा। साथ ही उसने अपने दाँत सियार की गरदन में गड़ा दिए। बाकी चूहे भी सियार पर झपटे और सबने कुछ ही देर में महात्मा सियार को कंकाल सियार बना दिया। केवल उसकी हड्डियों का पिंजर बचा रह गया।

सीख : ढोंग ज्यादा दिन नहीं चलता। ढोंगी को करनी का फल मिलता ही है।

□□□